Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.357
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2512S01V13P007

e-ISSN No. 2394-8426
Special Issue on Scientific Research Dec'25
Issue–XII(I), Volume–XIII

निंबार्काचार्य तथा वल्लाभाचार्य के मोक्ष मार्ग की व्यवहारिक प्रासंगिकता

सोनिया वैश्य
शोधार्थी, दर्शनशास्त्र विभाग, राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर विद्यापीठ, नागपुर–440033
Mob.no: - 7083074171
Email Id: - soniyavaishya99@gmail.com

डॉ. अतुल महाजन
प्राध्यापक एवं विभाग प्रमुख, दर्शनशास्त्र विभाग, रेणुका महाविद्यालय, नागपुर

सारांश
निंबार्काचार्य तथा वल्लाभाचार्य, मध्यकालीन उत्तर भारतीय वैष्णव भक्ति परंपरा के प्रमुख आचार्य माने जाते है। निंबार्काचार्य का द्वैताद्वैत दर्शन तथा वल्लाभाचार्य का शुद्धाद्वैत दर्शन, भक्ति मार्ग पर आधारित है, किंतु उनके व्याख्या एवं साधना प्रक्रिया में भिन्नताएँ दिखाई देती है। निंबार्काचार्य के मत अनुसार आत्मा मोक्ष में निर्विघ्न रहती है। मोक्षावस्था में भी आत्मा ईश्वर के अधीन रहती है। निंबार्काचार्य ने मोक्ष प्राप्ति हेतु पाँच साधन बताये हैं, जिसमें प्रपत्ति या ईश्वरशरणता प्रमुख है। वहीं वल्लभाचार्य, कृष्णभक्ति के उच्चतम स्तर को प्राप्त करना ही मोक्ष प्राप्ति का एकमात्र साधन बताते हैं। इसी हेतु उन्होंने मोक्ष प्राप्ति के दो मार्ग बताये हैं– मयार्दामार्ग तथा पुष्टिमार्ग।
यह शोध यह प्रतिपादित करता है कि दोनों आचार्यों का भक्ति प्रधान मार्ग आज भी व्यक्ति के नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक जीवन को संतुलित करने में सहायक है। इस प्रकार निंबार्काचार्य तथा वल्लभाचार्य द्वारा दिए गए मोक्ष मार्ग न केवल वेदांतिक परंपरा में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं, बल्कि आधुनिक युग में व्यक्ति के आस्था और आत्मिक उन्नति में भी सहायक हैं।
संकेत शब्दः निंबार्काचार्य, वल्लाभाचार्य, द्वैताद्वैत, शुद्धाद्वैत, मोक्ष मार्ग, प्रपत्ति और पुष्टिमार्ग ।

प्रस्तावना
आधुनिक युग में भौतिक और तकनीकी उन्नति ने जीवन को सुविधाजनक बनाया है, परन्तु मानसिक तनाव, सामाजिक असुरक्षा और नैतिक मूल्यों में गिरावट की समस्या भी बढ़ती जा रही है। ऐसी परिस्थिति में वेदांत द्वारा दिये गए मोक्ष मार्ग, विशेष रूप से निंबार्काचार्य तथा वल्लभाचार्य द्वारा प्रतिपादित भक्ति मार्ग अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। निंबार्काचार्य की शिक्षाएँ व्यक्ति को आत्मसमर्पण और सौहार्द की ओर प्रेरित करती है, जबकि वल्लभाचार्य का दर्शन सेवा, करूणा और सौम्यता को सामाजिक समरसता और व्यक्तिगत संतुलन का आधार बनाता है।
श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है–

"सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। [1]
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥"

इस श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन और संपूर्ण मानवता को यह संदेश दिया है कि सच्चा मोक्ष मार्ग केवल ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण में (शरणागति) है। कर्म, ज्ञान या उपासना से बढ़कर जब मनुष्य अहंकार छोड़कर ईश्वर की शरण में आता है, तभी वह पाप बंधनों से मुक्त होकर मोक्ष को प्राप्त करता है। इसी शरणागति को निंबार्काचार्य और वल्लभाचार्य ने अपने–अपने भक्ति मार्ग में प्रधान साधन माना है।

निंबार्काचार्य का मोक्ष मार्ग

निंबार्काचार्य द्वैताद्वैत दर्शन के प्रर्वतक थे। उनके मत अनुसार मोक्ष का अर्थ ब्रह्म से एकरूप होना नहीं बल्कि ब्रह्म से सारुप्य हो जाना है। अर्थात् आत्मा मोक्षावस्था में आत्म संतुष्टि प्राप्त करती है, परंतु उसकी स्वतंत्रता सीमित रहती है। इस अवस्था में भी वह ईश्वर के अधीन रहती है तथा ईश्वर के स्वरूपानंद का अंग बन जाती है। इसी अवस्था को निंबार्काचार्य ने मोक्ष कहा है।[2]

द्वैताद्वैत दर्शन में मोक्ष प्राप्ति के पाँच साधन बताए गए हैं। इनमें प्रपत्ति सर्वप्रमुख है।अन्य साधन प्रपत्ति हेतु उपकारी हैं। वह पाँच साधन निम्नलिखित हैं –

- **कर्म** – निष्काम भाव से किए गए कर्म से ही चित्तशुद्धि होती है। इसी से ही आत्मस्वरूप तथा ब्रह्मस्वरूप का ज्ञान प्राप्त होता है।
- **ज्ञान** – ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ तथा सच्चिदानंदस्वरूपी है, यही ज्ञान मोक्षदायक है।
- **उपासना** – अर्थात् ईश्वर के गुणो का चिन्तन, उनके स्वरूप का ध्यान तथा उनके नामों का जप करना है।
- **प्रपत्ति** – अर्थात् ईश्वर के प्रति समर्पण। रामानुजाचार्य के मत अनुसार यह समर्पण ईश्वर के ऐश्वर्य के समक्ष है। परंतु निंबार्काचार्य के अनुसार, प्रपत्ति में मुख्य गुण माधुर्य है।
- **गुरुपसत्ति** – अर्थात् गुरु के प्रति समर्पण। इसी के कारण ईश्वर की कृपा का प्रभाव मोक्ष अभिलाषी भक्त तक पहुँचता है।[3]

वल्लभाचार्य का मोक्ष मार्ग

वल्लभाचार्य शुद्धाद्वैत दर्शन के प्रवर्तक थे। शुद्धाद्वैत दर्शन कृष्णभक्ति का समर्थक है। वल्लभाचार्य के अनुसार कृष्णभक्ति के उच्चत्तम स्तर को प्राप्त करना ही मोक्ष प्राप्ति का एकमात्र साधन है।[4] वल्लभाचार्य ने मोक्ष प्राप्ति के दो प्रमुख मार्ग बताये हैं, जो निम्नलिखित हैं –

- **मर्यादामार्ग** – से जाने वाले जीव कर्म, ज्ञान और भक्ति को अपनाते हैं तथा अक्षर ब्रह्म को प्राप्त करते हैं।
- **पुष्टिमार्ग** – अर्थात् ईश्वर के अनुग्रह से उत्पन्न भक्ति। इस मार्ग का अनुसरण करने वाले जीव पुर्णतः ईश्वर की कृपा पर आश्रित होते हैं। इस मार्ग का मुख्य भाव ईश्वर की सेवा है।[5]

तुलनात्मक विश्लेषण

1. **जीव – ईश्वर सम्बन्ध**
   - निंबार्काचार्य – जीव और ईश्वर सदा को भिन्न एवं आभिन्न दोनों मानते हैं।
   - वल्लभाचार्य – जीव और जगत को ईश्वर का ही स्वरूप मानते हैं।

2. **भक्ति की भूमिका**
   - निंबार्काचार्य – वे भक्ति में समर्पण के भाव को महत्व देते है।

- वल्लभाचार्य – ने कृष्ण के बालस्वरूप को अधिक महत्व दिया है। उन्होंने अनन्य प्रेम और वात्सल्य भावना को मोक्ष का प्रमुख साधन बताया है।[6]

3. **मोक्ष की स्थिति**
   - निंबार्काचार्य – प्रपत्ति अर्थात् ईश्वर के प्रति समर्पण तथा सौहार्द का भाव।[7]
   - वल्लभाचार्य – पुष्टिः अर्थात् ईश्वर की कृपा। ईश्वर की लीला में सहभागिता और आनन्द।[8]

आधुनिक युग में व्यवहारिक प्रासंगिकता

(क) सामाजिक समरसता → आज के तकनीकी युग में भौतिकवादी प्रवृत्तियाँ बढ़ी हैं जिससे मनुष्य सदा तनाव, चिंता, असन्तोष से घिरा रहता है। इस प्रतिस्पर्धा के लोक में असहिष्णुता को अधिक बढ़ावा मिला है। इसी के निवारण हेतु निंबार्काचार्य तथा वल्लभाचार्य द्वारा दिये गए मोक्ष मार्गों की अधिक आवश्यकता है।
निंबार्काचार्य की प्रेमपूर्ण उपासना समाज में करूणा और सहिष्णुता को बढ़ाती है।
वल्लभाचार्य का पुष्टिमार्ग 'सेवा–संस्कृति' और सामूहिक सहयोग की भावना पैदा करता है।

(ख) मानसिक शान्ति → आज के तनावपूर्ण जीवन में आत्मसमर्पण और सेवाभाव व्यक्ति को आन्तरिक संतुलन देते हैं। निंबार्काचार्य का आत्म–समर्पण व्यक्ति को अहंकारमुक्त बनाता है। वल्लभाचार्य का पुष्टिमार्ग हमें सिखाता है कि ईश्वर की कृपा सहज प्रेम और अनुग्रह से सम्भव है। यह शिक्षा आज के समाज में सहजता, करुणा और मानवीय मूल्यों को मजबूत करती है।

(ग) नैतिक मूल्यों का संरक्षण → निंबार्काचार्य का अनुशासन–प्रधान भक्ति मार्ग और वल्लभाचार्य का प्रेम प्रधान मार्ग, दोनों ही जीवन में नैतिकता, संयम और कर्त्व्यनिष्ठा का महत्व बताते है। यह आधुनिक समाज में चरित्र निर्माण और मानवता को मजबूती प्रदान करता है।

(घ) वैश्विक दृष्टि से प्रासंगिक → आज जब विश्व स्तर पर भौतिकवाद और व्यक्तिगत स्वार्थ बढ़ रहा है, तब इन आचार्यों का संदेश सार्वभौमिक मूल्य प्रस्तुत करता है। आत्मसमर्पण और प्रेम आधारित संदेश विभाजन से एकता की ओर ले जाते हैं। सेवा और सहअस्तित्व का मार्ग विश्वशांति और आध्यात्मिक उन्नति की दिशा तय करता है।

निष्कर्ष

निम्बार्काचार्य तथा वल्लभाचार्य ने न केवल दार्शनिक दृष्टि से भक्ति मार्ग को प्रतिपादित किया है, अपितु उन्होंने सामाजिक, नैतिक, आध्यात्मिक दृष्टिकोण भी प्रस्तुत किया है। साथ ही यह भी बताया है कि कैसे एक जन सामान्य व्यक्ति अपने व्यवहारिक जीवन में मोक्ष मार्ग का अनुसरण कर के मोक्ष प्राप्त कर सकता है और इस भौतिकवादी, प्रतिस्पर्धी तथा तनावपूर्ण जीवन से मुक्त हो सकता है।

संदर्भ सूची

1. व्यास, महर्षि. (2016). श्रीमद्भगवद्गीता (अनुवादः जयदयाल गोयन्दका). (अध्याय 18, श्लोक 66) गीता प्रेस
2. Dasgupta, S. (1940). *A History of Indian Philosophy, Volume 3* (Chapter XXI: The Nimbārka School of Philosophy). Motilal Banarsidas.
3. दिक्षित, श्री. (1990). भारतीय तत्वज्ञान. फड़के प्रकाशन. ISBN:654824157
4. सिन्हा, ज. (2014). भारतीय दर्शन. मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशिंग हाउस ISBN: 9788120821323, 8120821327
5. Kapil, S. (2019). भारतीय दर्शनेषु मोक्ष प्रक्रिया. *Dev Sanskriti Interdisciplinary International Journal, 13*, 8–15. https://doi.org/10.36018/dsiij.v13i.110
6. गैरोला, वा. (2009). भारतीय दर्शन. लोकभारती प्रकाशन. ISBN: 9788180313509
7. Śarmā, R. (1975). *Akhila Bhāratīya jagadguru Śrī Nimbārkācārya Pīṭha, Salemābāda ke saṃsthāpaka Ācārya Paraśurāmadeva: vyaktitva aura kṛtitva*. Arcanā Prakāśana.
8. Miśra, B. (2002). *Pāvaka*. Atmaram & Sons.